सलाखों में सृजन आजीवन कारावास के कैदियों ने कैनवास पर किया कमाल, आज से चार दिवसीय प्रदर्शनी, व्हाट्सएप पर वायरल हुआ प्रोमो- 'सृजन'

भारत भवन की रंगदीर्घा में पहली बार कैदियों की 45 पेंटिंग

सिटी रिपोर्टर | भोपाल

पहली बार जेलों में बंद कैदियों की कलाकृतियों को आम लोग देख सकेंगे। जेल विभाग की चार दिवसीय प्रदर्शनी बुधवार 16 मार्च से भारत भवन में शुरू होगी। इस दौरान 48 कैदियों की 45 चुनिंदा कलाकृतियों को प्रदर्शित किया जाएगा। जेल विभाग ने कैदियों की प्रतिभा को मंच देने के उद्देश्य से यह शुरुआत की है। प्रदर्शनी दोपहर दो बजे से रात 8 बजे तक खुली रहेगी।

कैदियों की सृजन प्रदर्शनी के लिए भोपाल, बड़वानी, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर, जबलपुर, सतना और सागर जेल में बंद कैदियों की 129 कलाकृतियां जेल विभाग को मिली हैं। इनमें से 83 का चयन किया गया था। स्थान अभाव के कारण रंगदीर्घा में 45 कलाकृतियां प्रदर्शित की जा सकेंगी। प्रदर्शनी के पहले एक्सपर्ट्स डॉ. आलोक भावसार, डॉ. रेखा नीलअरुण शर्मा और डॉ. शैलेंद्र नामदेव के पैनल ने पेंटिंग्स को देखकर उनकी प्राइज तय की। ये पेंटिंग्स 2500 रुपए से 12 हजार रुपए तक की हैं।

जेल की बैरक में दीवारों पर कैदी अक्सर कुछ चित्रकारी करते हैं। जेल डीजी विजय कुमार सिंह ने कैदियों की ऐसी ही कुछ कलाकृतियों को देखकर प्रदर्शनी लगाने का आइडिया शेयर किया। आइडिया ऐसा था कि न केवल जेल के अफसर और कर्मचारियों बल्कि बंदियों को भी रोमांचित कर गया। कैदियों ने अपनी कलाकृतियों में अलग-अलग विषयों को शामिल किया है। उन्होंने कैनवास पर भगवान कृष्ण की भक्ति, नारी का सौंदर्य, सुबह का सूरज, सिंहस्थ, आदिवासी संस्कृति और अन्य विषयों को शामिल किया है।

पेंटिंग्स को तैयार करने के लिए मिला सिर्फ 20 दिन का वक्त

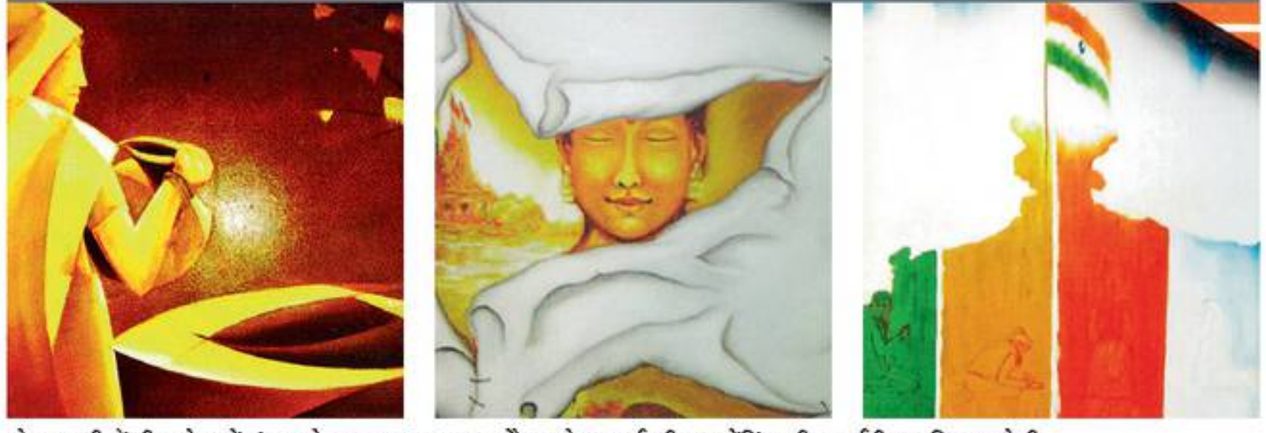

भोपाल की केंद्रीय जेल में बंद राजेश बाथम, लक्ष्मण और मनोज शर्मा की यह पेंटिंग भी प्रदर्शनी का हिस्सा होगी।

सभी को उम्रकैद की सजा

जिन बंदियों ने ये कलाकृतियां बनाई हैं वे सभी आजीवन कारावास की सजा काट रहे हैं। जेल विभाग के अफसर बताते हैं कि अपनी कला के माध्यम से ये बंदी परिवार से दूर होने की पीड़ा तो दर्शाते हैं। कहीं न कहीं इनमें अपने किए पछतावे के साथ भविष्य में सुधार का भाव भी नजर आता है। यही वजह है कि ये कलाकृति बनाने वाले एक कैदी ने पूछने पर ये पंक्तियां कहीं -''पत्थर की भी बदल सकती है किस्मत, शर्त है कि उसे सलीके से संवारा जाए।'

खाली दिमाग हमेशा शैतान का घर नहीं होता...

कलाकृतियों और प्रदर्शनी के लिए सिर्फ 20 दिन का वक्त मिला। लेकिन बंदियों में बहुत उत्साह था। वे पहली बार कैनवास पर अपनी सोच को आकार दे रहे थे। कुछ कैदी लकड़ी, पत्थर पर मूर्ति बना रहे थे तो किसी ने लोहे और प्लास्टिक को चुना। जब कलाकृतियां पूरी हुईं तो हम भी हैरान थे कि ये इतना अच्छा काम कर सकते हैं। इनके काम को देखकर कहा जा सकता है खाली दिमाग हमेशा शैतान का घर नहीं होता, कभी-कभी कलाकार का घर भी होता है।

शैफाली तिवारी, सतना जेल अधीक्षक और प्रोजेक्ट इंचार्ज